Nāsadīyam

A Multi-Disciplinary National Research Journal (Annual)
Peer Reviewed/Refereed
Available online at: https://nasadiyam.dmmkkr.ac.in/
ISSN: 3108-0200 (Online)
Volume 4, Issue 1 (Jan – Dec), 2025, Pp 23-29

पंचतंत्र की नीतिकथाएं और मानवीय मूल्य

डॉ॰ रीजा
सहायक प्रवक्त्री (संस्कृत विभाग)
दयानन्द महिला महाविद्यालय
कुरुक्षेत्र, हरियाणा, भारत
ई-मेलः reeja.skt17@gmail.com
दूरभाषः 8168196003

संक्षेपिका

पंचतंत्र भारतीय संस्कृति, सभ्यता व मानवीय मूल्यों पर आधारित ग्रन्थ है। लौकिक संस्कृत साहित्य नीति वचनों से ओत-प्रोत है। संस्कृत साहित्य में वर्णित नीति कथाएं विश्व भर में प्रसिद्ध है। इन कथाओं का प्रभाव अन्य भाषाओं के साहित्य पर भी दिखाई पड़ता है। जिसके कारण पंचतंत्र की नीति कथाएं आज एक काव्य-विधा के रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी है। पण्डित विष्णु शर्मा को नीति कथाओं का सम्राट माना जाता है। इनकी नीति कथाओं में विचार, भाव और कल्पनाओं का सुन्दर समन्वय देखने को मिलता है। पंचतंत्र में नीति कथाओं तथा सुभाषितों में तत्कालीन समाज की सरल कथा-शैली के माध्यम से पशु-पक्षियों को पात्र रूप में चित्रित कर मन्दबुद्धि बालकों को शिक्षा तथा जागरूकता प्रदान करने का प्रयास किया गया है। लघु कथाओं के माध्यम से शिक्षा को रुचिकर बनाकर शिक्षित करने का प्रयास अतुलनीय है। इन कथाओं के माध्यम से मानवीय मूल्यों, आदर्शों के साथ शिक्षा प्रदान करना ही मुख्य उद्देश्य रहा है। जिससे भारतीय संस्कृति सभ्यता को जान सके तथा सभी को एकता के सूत्र में बांधकर शिक्षा द्वारा भारतीय आदर्शों, मूल्यों को एक आदर्श रूप दिया जा सके। प्राचीन समय में मानवीय मूल्यों की अभिव्यक्ति के लिए सशक्त माध्यम के रूप में कथा कहानियों का प्रयोग किया जाता था। क्योंकि कथा कहानियां मानसिक पटल पर चिरस्थायी प्रभाव डालती है।

कुंजी शब्द- पंचतंत्र, नीति कथाएं, मानवीय मूल्य, नैतिक शिक्षा, सदाचार।

शोध पत्र

संस्कृत साहित्य मानव विचारों एव आदर्शों का परिचायक माना जाता है क्योंकि इस साहित्य में मानव के सम्पूर्ण विकास के लिए मानवीय मूल्यों पर आधारित नियमों का उपदेश दिया गया है। आज के भौतिकतावादी युग में विज्ञान ने जहां मनुष्य को भौतिक सुख और सुविधाएं उपलब्ध करवायी है वहीं दूसरी ओर मनुष्य मानसिक शान्ति व आध्यात्मिक सुख से वंचित हो गया है। जिसका मुख्य कारण है मनुष्य में आदर्शों व मूल्यों का ह्रास। आधुनिक समय में व्याप्त भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिकता, आतंकवाद, अराजकता जैसी भयानक समस्याओं का कारण मानवीय मूल्यों का विस्मृत होना ही है। मानव समाज को अनुशासित और सुखमय बनाने के लिए जो नियम निर्धारित किये गये हैं उनका उद्देश्य 'बहुजनहिताय बहुजनसुखाय' ही होता है।

वर्तमान समय में समाज में परस्पर ईर्ष्या, द्वेष की भावना बढ़ती जा रही है जिसका मुख्य कारण साम्प्रदायिक भावना, अभिमान, धनलोलुपता आदि है। वैदिक साहित्य में एकता, समभाव, सह-अस्तित्व पर बल दिया गया है।[1] पुरुषसूक्त में सम्पूर्ण विश्व को एक ही पिता की सन्तान माना गया है।[2] श्रीमद्भगवद्गीता में भी सभी से समभाव रखने वाले को श्रेष्ठ बताया गया है।[3] लोभ के कारण मनुष्य में नैतिक मूल्यों का पतन होता है। संस्कृत साहित्य लोभ को त्यागकर शान्तिमय जीवन जीने का सन्देश देता है। ईशावास्योपनिषद् में कहा गया है- 'तेन

त्यक्तेन भुंजीथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।'[4] पंचतंत्र में मनोहर कथाओं के माध्यम से लोभ-लालच का त्याग करने का सन्देश मिलता है।

पंचतंत्र भारतीय संस्कृति, सभ्यता व मानवीय मूल्यों पर आधारित ग्रन्थ है। लौकिक संस्कृत साहित्य नीति वचनों से ओत-प्रोत है। संस्कृत साहित्य में वर्णित नीति कथाएं विश्व भर में प्रसिद्ध है। इन कथाओं का प्रभाव अन्य भाषाओं के साहित्य पर भी दिखाई पड़ता है। जिसके कारण पंचतंत्र की नीति कथाएं आज एक काव्य-विद्या के रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी है। पण्डित विष्णु शर्मा को नीति कथाओं का सम्राट माना जाता है। इनकी नीति कथाओं में विचार, भाव और कल्पनाओं का सुन्दर समन्वय देखने को मिलता है। पंचतंत्र में नीति कथाओं तथा सुभाषितों में तत्कालीन समाज की सरल कथा-शैली के माध्यम से पशु-पक्षियों को पात्र रूप में चित्रित कर मन्दबुद्धि बालकों को शिक्षा तथा जागरूकता प्रदान करने का प्रयास किया गया है। लघु कथाओं के माध्यम से शिक्षा को रुचिकर बनाकर शिक्षित करने का प्रयास अतुलनीय है। इन कथाओं के माध्यम से मानवीय मूल्यों, आदर्शों के साथ शिक्षा प्रदान करना ही मुख्य उद्देश्य रहा है। जिससे भारतीय संस्कृति सभ्यता को जान सके तथा सभी को एकता के सूत्र में बांधकर शिक्षा द्वारा भारतीय आदर्शों, मूल्यों को एक आदर्श रूप दिया जा सके। प्राचीन समय में मानवीय मूल्यों की अभिव्यक्ति के लिए सशक्त माध्यम के रूप में कथा कहानियों का प्रयोग किया जाता था। क्योंकि कथा कहानियां मानसिक पटल पर चिरस्थायी प्रभाव डालती है।

पंचतंत्र की कहानियों में मानवीय मूल्यों को पशु-पक्षियों के माध्यम से दर्शाया गया है। इन कहानियों के माध्यम से केवल मनोरंजन ही नहीं होता अपितु ईमानदारी, बुद्धिमता, साहस, धैर्य जैसे मानवीय मूल्यों का विकास भी होता है। पंचतंत्र की रचना 300 ईसा पूर्व मानी गयी है। इस ग्रन्थ की रचना जिस काल में की गयी थी। उस समय भारत में कथाएं एवं कहानियां शिक्षा व संचार का महत्त्वपूर्ण साधन मानी जाती थी। इन कहानियों को नैतिक व्यवहार और व्यावहारिक ज्ञान सिखाने के लिए लिखा गया था। जिससे युवा वर्ग में मानवीय मूल्यों का विकास किया जा सके। पंचतंत्र को पांच भागों (तन्त्रों) में विभाजित किया गया है। पंचतंत्र के मित्रभेद, मित्रसंप्राप्ति, काकोलूकीयम, लब्धप्राणाशम् तथा अपरीक्षितकारकम् इन पांच भागों में वर्णित मनोहर कथाओं में अनेक मानवीय मूल्यों की अभिव्यक्ति हुई है।

वैश्विक और भारतीय साहित्य पर पंचतंत्र की कथाओं का गहरा प्रभाव दिखाई पड़ता है। पंचतंत्र की कहानियों का प्रकाशन अनेक भाषाओं में हुआ है। इन कथाओं ने बच्चों की शिक्षा और चरित्र निर्माण पर गहरा प्रभाव डाला। पंचतंत्र की कहानियों का अनुवाद अंग्रेजी और अन्य कई भाषाओं में भी किया गया तथा ये कहानियां विदेशी शब्दों में भी प्रसिद्ध है। विश्व प्रसिद्धि के पश्चात् इस कथा संग्रह को अनेक बाद अनुवादित संशोधित व सम्पादित किया गया । पंचतंत्र का एक प्रसिद्ध अनुवादित संस्करण है जिसका अनुवाद 'चर्ल्स राक्लिफ' ने किया था। इसी प्रकार से पंचतंत्र की कहानियों को अनेक संशोधित संस्करणों के माध्यम से आधुनिक पाठकों तक पहुंचाया गया । पंचतंत्र भारतीय साहित्य का महत्त्वपूर्ण भाग रहा है। यह पुस्तक एक ऐसा प्राचीनतम और प्रसिद्ध कथा संग्रह है जिसमें विभिन्न प्राणियों की जीवनी और दृष्टान्तों का वर्णन मिलता है। पंचतंत्र की कहानियों में ज्ञानवर्धक कथाओं के माध्यम से नैतिक मूल्य व मानवीय मूल्यों संबंधी उपेदश दिए गये है। इन कथाओं में पशु-पक्षी, बाघ-हिरण, खरगोश, कछुआ जैसे चरित्रों की गतिविधियों के माध्यम से सामाजिक व व्यक्तिगत जीवन के महत्त्वपूर्ण मुद्दों को दर्शाया गया है।

पंचतंत्र की कहानियों में बुद्धिमता, सत्यनिष्ठा, धैर्य, मित्रता, दया, सहानुभूति, आत्म-नियंत्रण, नैतिकता जैसे मानवीय मूल्यों की शिक्षा दी गयी है।

बुद्धिमता

'बुद्धिर्यस्य बलं तस्य'[5] नामक कथा में वन प्रदेश के पशुओं के माध्यम से यह सिद्ध किया है कि शारीरिक बल की अपेक्षा बुद्धि में अधिक बल होता है। एक वन में एक शक्तिशाली भासुरक नाम का सिंह रहता था, जो प्रतिदिन जंगल के सभी जानवरों को मारकर खा जाता था। एक दिन एक चतुर खरगोश की बारी आई। वह खरगोश सिंह के पास जाते हुए उसकी मृत्यु का उपाय सोचने लगा।

खरगोश में अपनी बुद्धि के बल पर शक्तिशाली शेर को मार दिया और वन प्रदेश के पशुओं की रक्षा की। पण्डित विष्णु शर्मा इस कथा के माध्यम से सिद्ध करते है -

बुद्धिर्यस्य बलं तस्य निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम्।
वने सिंहो मदोन्मत्तः शशकेन निपातितः ।।[6]

अर्थात् जिसके पास बुद्धि है उसी का बल है। बुद्धिहीन के पास बल कैसे संभव है? वन में खरगोश ने मद से मतवाले सिंह को मरवा दिया। वास्तव में शारीरिक शक्ति की अपेक्षा बुद्धि की शक्ति बलवान् होती है। बुद्धि के द्वारा वे सभी कार्य सरलता से किए जा सकते हैं जो शारीरिक बल से नहीं किये जा सकते। जैसे इस कथा में भासुरक नामक सिंह ने शरीर से शक्तिशाली होने पर अपने अहंकार के कारण वन प्रदेश के सभी जानवरों को अपने वश में कर लिया था परन्तु एक छोटे से खरगोश ने उसे अपनी बुद्धिमता से मार डाला। उसने अपनी भी रक्षा की और वन प्रदेश के सभी पशुगण भी सुरक्षित हो गये।

सत्य व ईमानदारी

पंचतंत्र में वर्णित 'नीलवर्णः शृगालः' कथा के माध्यम से सत्य व ईमानदारी के महत्त्व को स्पष्ट किया गया है। इस कथा के अनुसार शृगाल संयोगवश नीले रंग में रंगकर स्वयं को जगल के राजा के रूप में प्रस्तुत करता है तथा वह जंगल के सभी जानवरों पर अपना शासन स्थापित कर लेता है। परन्तु शृगाल की यह कृत्रिम पहचान 'सत्यं वद धर्मं चर'[7] इस मूल ध्येय वाक्य के प्रतिकूल है। जिसमें कहा गया है कि सत्य का पालन और धर्म का आचरण ही जीवन का सर्वश्रेष्ठ मार्ग है। यहां पर शृगाल का यह मिथ्या रूप यह दर्शाता है कि असत्य पर आधारित पद, प्रतिष्ठा कभी भी स्थायी नहीं हो सकती। यथा - नानृतात् पातकं परम्'[8] अर्थात् असत्य कभी भी आधार या प्रमाण नहीं बन सकता। इस कथा से संकेत मिलता है कि बाह्य आडंबर और छल के आधार पर प्राप्त की गयी सफलता सदैव भय, असुरक्षा और संशय को उत्पन्न करती है। शृगाल की मानसिक स्थिति इसी तथ्य का प्रमाण है। शृगाल का स्वभाव उसके द्वारा किये गये छल को वन के समस्त पाणिवर्ग के समक्ष उजागर कर देता है। जब वह अपनी स्वाभाविक हुंकार भरता है तो जंगल के प्राणियों को उसका वास्तविक रूप ज्ञात हो जाता है। उसी क्षण उसके असत्य का अन्त हो जाता है। यह प्रसंग भारतीय ज्ञान परम्परा के सत्य पर आधारित मूल सिद्धान्त की पुष्टि करता है। यथा 'सत्ये स्थिता हि साधवः'[9] अर्थात् साधु पुरुष वही है जो सत्य पर स्थित रहे क्योंकि सत्य ही स्थायी प्रतिष्ठा का आधार है।

इसी प्रकार ईमानदारी केवल नैतिक आदर्श नहीं अपितु सामाजिक विश्वास और स्थिरता की नींव है। सत्य और ईमानदारी व्यक्ति को स्थायी, सम्मान, आत्मविश्वास और विश्वनीयता प्रदान करती है । पचतंत्र की यह कथा शिक्षा देती है कि सत्य ही वह मूल्य है जो मनुष्य को चरित्र दृढ़ आधार प्रदान करता है। ईमानदारी रूपी शक्ति जीवन की दिशा और गुणवत्ता दोनों को सकारात्मक व श्रेष्ठ रूप प्रदान करती है।

दया एवं सहानुभूति

पंचतंत्र की कहानियों में दया और सहानुभूति जैसे मानवीय मूल्यों का विशेष महत्व है। इन भावों की उत्पत्ति मनुष्य को परोपकारी, सहयोगी और संवेदनशील बनाती है। यथा- दया सर्वभूतेषु सतां धर्मः प्रकीर्तितः।[10] अर्थात् सज्जनों का धर्म है कि वे सभी प्राणियों पर दया करे।

पंचतंत्र में वर्णित सिंह और चूहें की कथा दया के महत्त्व को प्रतिपादित करती है। एक बार सिंह ने एक छोटे चूहे को पकड़ लिया, परन्तु दया भाव से प्रेरित होकर उसे मुक्त कर दिया। इस कथा से शिक्षा मिलती है कि दया का फल कभी व्यर्थ नहीं जाता। यथा- 'कृतेऽपि न विपद्यन्ते दयालवः सज्जनाः सदा।'[11] अर्थात् दयालु व्यक्ति अपने किए हुए उपकार से कभी भी हानि नहीं उठाते अपितु वही उनके जीवन का आधार बनता है। इसी प्रकार मृग, कछुआ, कौवा और चूहें की कथा में सहानुभूति का उत्कृष्ट उदाहरण मिलता है। यथा- सहायं साधयेत् प्राज्ञः क्लिष्टे कालान्तरम् यथा[12] अर्थात् बुद्धिमान व्यक्ति को संकट में पड़े मित्र की सहायता अवश्य करनी चाहिए।

इन कथाओं से स्पष्ट होता है कि दयालुता और सहानुभूति ही मानवता की मूल पहचान है। प्रत्येक जीव परमात्मा का ही अंश है, इसलिए सभी के प्रति दया, करुणा रखना ही सच्चा धर्म है। यदि प्रत्येक मनुष्य इन मानवीय मूल्यों का अनुकरण करे तो समाज में सौहार्द, सहयोग और शान्ति का वातावरण स्थापित किया जा सकता है। उक्तं च-'दयालुता हि मानवस्य भूषणं सर्वोतमम्।'[13] अर्थात् दया ही मनुष्य का सबसे उत्तम आभूषण है।

धैर्य

धैर्य का अर्थ है कठिन परिस्थितियों में भी संयम स्थिरता और आत्मविश्वास बनाए रखना। धैर्य एक ऐसा गुण है जो विपरीत परिस्थितियों में भी मनुष्य को विवेकपूर्ण निर्णय लेने की शक्ति प्रदान करता है। उक्तं च- 'धैर्यं सर्वत्र साधनम्।'[14] अर्थात् धैर्य ही प्रत्येक कार्य की सफलता का मूल साधन है। मृग, कछुआ, कौवा और चूहें की कथा में जब हिरण शिकारी के जाल में फंस जाता है, तब उसके मित्र शान्तचित्त होकर योजना बनाते है। चूहा जाल काटता है, कौवा ऊपर से देखता है और कछुआ धीरे-धीरे इस योजना को सफल बनाने में सहयोग करता है। इस कथा में इन सभी का धैर्य ही उनकी सफलता का कारण बनता है। यथा- 'धैर्येण सर्वमाप्नोति नात्यन्तं क्षिप्यते बुधः।'[15] अर्थात् धैर्यवान व्यक्ति सब कुछ प्राप्त कर सकता है। बुद्धिमान व्यक्ति कभी भी विपरीत परिस्थितियों में भी शीघ्र क्रोधित या विचलित नहीं होता।

इसी प्रकार से बंदर और मगर की कथा में जब मगर बंदर के साथ छल करके नदी में डुबाने का प्रयास करता है, तब उस परिस्थिति में बंदर अपना धैर्य बनाए रखता है। वह अपनी बुद्धि व शान्तचित्तता से विचार करता हुआ योजना बनाता है तथा मगर को कहता है कि उसका हृदय तो पेड़ पर रह गया है, जिससे मगर मूर्ख बन जाता है। इस कथा से शिक्षा मिलती है कि धैर्य और विवेक से विपत्ति को भी अवसर में परिवर्तित किया जा सकता है। उक्तं च- धैर्येण हि विजीयन्ते दुर्लभाः सम्पदः सदा'।[16] अर्थात् धैर्य के द्वारा ही कठिन से कठिन परिस्थिति में

सफलता प्राप्त की जा सकती है। पंचतंत्र में अनेक स्थानों पर यह शिक्षा दी गयी है कि जो व्यक्ति विपत्ति में धैर्य नहीं खोता, वही सच्चा ज्ञानी और विजयी होता है। यथा - 'यस्य धैर्यं न विप्रकम्पते तस्य सिद्धिर्न दूरं भवति।'[17] अर्थात् जिसका धैर्य नहीं डगमगाता, उसकी सफलता कभी दूर नहीं होती।

आत्म-नियंत्रण

इन्द्रियों, क्रोध, लोभ और वाणी पर नियंत्रण रखना ही आत्म नियंत्रण कहलाता है। पंचतंत्र के अनुसार जो व्यक्ति अपनी लालसा, वासना और क्रोध को नियंत्रित करता है, वही सच्चा ज्ञानी कहलाता है। यथा- 'इन्द्रियाणां नियन्ता हि यः स विजयी नरः।'[18] पंचतंत्र के अनुसार बिना सोचे विचारे बोले गए शब्द, तलवार से भी अधिक हानि पहुँचाते हैं। इसलिए वाणी पर नियंत्रण ही आत्मसंयम का प्रथम अंग है। यथा- 'अनुक्तं चाप्यनर्थाय वक्तं चाप्यनुतापनम्।'[19] अर्थात् जो बात कही ही नहीं गयी वह अनर्थ से बचा लेती है परन्तु असयंमित रूप से कही गयी बात पश्चाताप का कारण बनती है। पंचतंत्र में कहा गया है कि क्रोध मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है जो व्यक्ति क्रोध पर नियंत्रण रखता है वही सच्चा बुद्धिमान है। उक्तं च - 'क्रोधो हि शत्रुर् नृणां अन्तको हि।'[20] अर्थात् क्रोध मनुष्य का शत्रु है, वही अन्त का कारण बनता है। इसी प्रकार लोभ व्यक्ति के पतन का मुख्य कारण है। पंचतंत्र में लोभी ब्राह्मण और स्वर्णमृग की कहानी इस बात को दर्शाती है कि जो लोभ पर नियंत्रण नहीं रखता, वह स्वयं का विनाश करता है। यथा- 'लोभ एवं विनाशाय नित्यं नृणां भविष्यति।[21] पंचतंत्र में आत्मसंयम को सबसे बड़ा बल माना गया है। उक्तं च- 'वशीकृतो मनो यस्य न तस्य जगति दुष्करम्' ।[22] अर्थात् जिसका मन वश में है, उसके लिए इस संसार में कुछ भी कठिन नहीं है। पंचतंत्र की कथाओं से शिक्षा मिलती है कि आत्मनियंत्रण ही सच्चा शासन है जो मनुष्य स्वयं पर शासन करता है, वही समाज और परिस्थितियों पर विजय प्राप्त कर सकता है। संयम ही व्यक्ति को विवेकशील, नैतिक व सम्माननीय बनाता है।

नैतिकता

पंचतंत्र की कहानियों में नैतिकता का अर्थ केवल धर्म पालन या सत्य वचन नहीं है अपितु सदाचार, करुणा, दया, संयम और न्यायपूर्ण आचरण हैं इसका अर्थ है कि व्यक्ति को लाभ से अधिक धर्म और सद्गुण को महत्त्व देना चाहिए। यथा- 'धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।'[23] अर्थात् जो धर्म का नाश करता है, धर्म उसका विनाश कर देता है और जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है। पंचतंत्र में 'सिंह और सियार' की कथा में झूठ बोलने वाला सियार अन्त में अपने ही द्वारा किये गए छल से नष्ट हो जाता है। उक्तं च- 'सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयान्न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्'[24] अर्थात् सत्य बोले, प्रिय बोले, अप्रिय सत्य नहीं बोलना चाहिए। यह उदाहरण वाणी संयम और नैतिक व्यवहार दोनों का ही शिक्षाप्रद सिद्धान्त है। पंचतंत्र की कथाएं- चातुर्य व नीति के साथ-साथ यह सिखाती है कि जीवन में सच्ची सफलता नैतिक आचरण से ही प्राप्त होती है। नैतिकता ही मनुष्य का सर्वोत्तम गुण है- उसी से समाज में शान्ति, सहयोग और समरसता स्थापित हो सकती है। यथा- 'नैतिकता हि मानवस्य भूषणं परमं स्मृतम्'[25] अर्थात् नैतिकता ही मनुष्य का सर्वोत्तम आभूषण है।

भारतीय संस्कृति का मुख्य आधार सत्य, धर्म, नैतिकता, धैर्य और सदाचार ही रहा है। इन मानवीय मूल्यों का सजीव चित्रण पंचतंत्र की कथाओं में दृष्टिगोचर होता है। इस ग्रन्थ की रचना लगभग दो सहस्र वर्ष पूर्व हुई थी परन्तु इसकी शिक्षाएं आज वर्तमान समय में भी उतनी ही प्रासंगिक है। वर्तमान समय में जब समाज भौतिकता,

प्रतिस्पर्धा और स्वार्थ की दौड़ में उलझा हुआ है। तब पंचतंत्र की कथाएं पुनः स्मरण कराती है कि मानव जीवन का वास्तविक उद्देश्य मानवीय मूल्यों का अनुसरण करना है।

पंचतंत्र भारतीय ज्ञान परम्परा का अद्वितीय ग्रन्थ है जिसमें नीति, दर्शन और मानवीय मूल्य परस्पर ऐसे जुड़े हुए है कि वे केवल कथा संग्रह न रहकर जीवन का व्यवहारिक दर्शन बन जाता है। पंचतंत्र की कथाओं का मुख्य उद्देश्य मानव समाज में नीति, विवेक, करुणा, आत्मसंयम जैसे संस्कारनिहित मानवीय मूल्यों को जाग्रत करना है जिससे समाज में सन्तुलन, सहयोग और मानवीय संवेदना स्थापित की जा सके। आज के युग में जब समाज तीव्र भौतिक प्रगति, तकनीकी उन्नति और उपभोक्तावादी प्रवृत्तियों से घिरा हुआ है, तब पंचतंत्र की कथाएं नैतिक दिशा और आत्मिक शुद्धता का दीपस्तंभ बनकर उभरती है। आधुनिक समाज की विडंबना ही यही है कि ज्ञान की मात्रा तो बढ़ी है परन्तु विवेक और मूल्य-चेतना क्षीण हो गयी है। ऐसी परिस्थितियों में पंचतंत्र में निहित मानवीय मूल्य मानवता को पुनः अपने मूल स्वभाव-सत्य, दया, संयम, धैर्य और सदाचार की ओर लौटने का आह्वान करते हैं।

निष्कर्ष

पंचतंत्र में बुद्धिमता केवल चातुर्य नहीं अपितु सद्बुद्धि है जो लोकमंगल व आत्मकल्याण दोनों में सहायक माना जाता है। आधुनिक सूचना प्रचुर युग में जहाँ ज्ञान साधन मात्र बन गया है। वहां पंचतंत्र सिखाता है कि ज्ञान तभी सार्थक है जब वह आत्मनियंत्रण और विवेक से संयमित हो। आज जब असत्य और प्रचारवाद की प्रवृत्ति जनमत को प्रभावित करती है तब पंचतंत्र स्मरण कराता है कि सत्य केवल व्यक्तिगत चरित्र नहीं अपितु लोकतांत्रिक आचरण का भी आदर्श है तथा सत्य को विनम्रता और मर्यादा के साथ प्रस्तुत किया जाए। आवेग, त्वरित और अधैर्य व्यक्ति का असंतुलन और मानसिक तनाव बढ़ाता है। परन्तु ऐसी परिस्थिति में पंचतंत्र सिखाता है कि धैर्य ही नीति का मूल है, क्योंकि उसी से विवेक में स्थायित्व आता है। कछुआ और खरगोश की कथा से शिक्षा मिलती है कि स्थिरता ही सफलता की जननी है। आज के डिजिटल युग में मित्रता और निष्ठा जैसे मानवीय मूल्य केवल औपचारिकता तक ही सीमित रह गये हैं। ऐसे में पंचतंत्र की मृग, कछुआ, कौवे और चूहे की कथा सिखाती है कि सच्ची मित्रता स्वार्थरहित सहयोग पर आधारित होती है। इसी प्रकार दया और सहानुभूति वर्तमान की वैश्विक परिस्थितियों में सर्वाधिक आवश्यक मानवीय मूल्य है। जातीय भेदभाव, युद्ध, हिंसा और पर्यावरणीय शोषण ने सम्पूर्ण विश्व को असंतुलित कर दिया है। यहां पंचतंत्र स्मरण कराता है कि दया ही स्थायी शान्ति का आधार है। यह नीति आज के युग की करुणा-विहीन संवेदनहीनता के विरूद्ध एक सशक्त उत्तर है। अत्यधिक उपभोग, तकनीकि लत और भौतिक आकर्षण ने मानव को अपनी ही इन्द्रियों का दास बना दिया है। पंचतंत्र में वर्णित आत्मसंयम का संदेश आज के युग में मानसिक संतुलन और आत्मविवेक की पुर्नस्थापना का मार्ग प्रशस्त करता है।

अतः वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जब विश्व विविध नैतिक संकटों जैसे-भ्रष्टाचार, असहिष्णुता, हिंसा और पर्यावरण उपेक्षा से जूझ रहा है, तब पंचतंत्र के ये मानवीय मूल्य सिखाते हैं कि प्रगति का वास्तविक अर्थ नैतिक संतुलन और मानवता की रक्षा में निहित है। पंचतंत्र के ये मानवीय मूल्य आधुनिक ग्लोबल सिविलाइज़ेशन को स्मरण कराते है कि तकनीकी विकास तभी सार्थक है जब वह मानवता, सहानुभूति और धर्मबुद्धि से प्रेरित हो। पंचतंत्र में निहित मानवीय मूल्य शाश्वत है, जो समय और परिस्थिति से परे है। वे आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं

जितने प्राचीन समय में थे। यही मानवीय मूल्य वर्तमान समाज को दया, आत्मसंयम, सत्य, नैतिकता के पथ पर अग्रसर कर एक संतुलित, न्यायपूर्ण और मानवीय समाज की रचना कर सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. अथर्ववेद, 3.30.6 : समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सहचितमेषाम् समान मनो यथा सुभासति ॥
2. ऋग्वेद, 10.90
3. श्रीमद्भगवद्गीता 2.48 : समत्वं योग उच्यते।
4. ईशावास्योपनिषद्, मंत्र संख्या-1
5. पंचतंत्र - मित्रभेद, पृ० 233
6. वही, मित्रभेद, श्लोक 39
7. तैत्तिरीयोपनिषद्, 1.11.1
8. पंचतंत्र मित्रलाभ
9. वही,
10. पंचतंत्र मित्रभेद
11. वही,
12. वही, मित्रसंप्राप्ति
13. वही, अपरीक्षितकारक
14. वही, मित्रभेद
15. वही, श्लोक 53
16. वही, मित्रसंप्राप्ति
17. वही, अपरीक्षितकारक
18. वही, अपरीक्षितकारकं
19. वही, मित्रभेद
20. वही, अपरीक्षितकारकं
21. वही, लब्धप्रणाश
22. वही, अपरीक्षितकारकं
23. मनुस्मृति- 8.15
24. वही, 4.138
25. वही, अपरीक्षितकारकं